5. किसान और मज़दूर

इस पाठ में छोटे बड़े और मध्यम किसानों और मज़दूरों के बारे में चर्चा की गई है। तुम इन लोगों के बारे में क्या जानते हो - कक्षा में चर्चा करो।

तुमने भूगोल में मैदान, पहाड़ और पठार के गांवों के बारे में पढ़ा था; और वहां की खेती-किसानी के बारे में जाना था। वह अलग-अलग गांवों की बात थी। इस पाठ में हम एक गांव में जाकर वहां के छोटे-बड़े किसानों और मज़दूरों से आजकल की किसानी के बारे में चर्चा करेंगे।

पिछले कुछ सालों में खेती के तरीकों में कई बदलाव आए हैं। पहले कुएं से पानी निकालने के लिए मोठ होते थे जिससे थोड़ी सी सिंचाई हो पाती थी। अब नहरों से हज़ारों एकड़ की सिंचाई हो जाती है। कुएं में मोटर लगा कर पानी निकाला जाता है। इस तरह बहुत सारी ज़मीन सिंचित हो गई है।

पहले जो बीज बोए जाते थे, उनकी उपज कम होती थी। किसान खेतों में गोबर की खाद डालते थे। अब संकर बीज, रासायनिक खाद और दवा का उपयोग होने लगा है। पहले हल-बखर, बैलों और मज़दूरों की मेहनत से पलेवा, बोनी, दावन, उड़ावनी की जाती थी। अब कई जगहों पर ट्रैक्टर और थ्रेशर जैसी मशीनों से काम किए जाने लगे हैं। कटाई के लिए हार्वेस्टर भी नज़र आ रहे हैं।

नई खेती की कुछ खास बातें है। इसमें कई चीज़ों का इन्तज़ाम <u>एक साथ</u> करना ज़रूरी होता है।

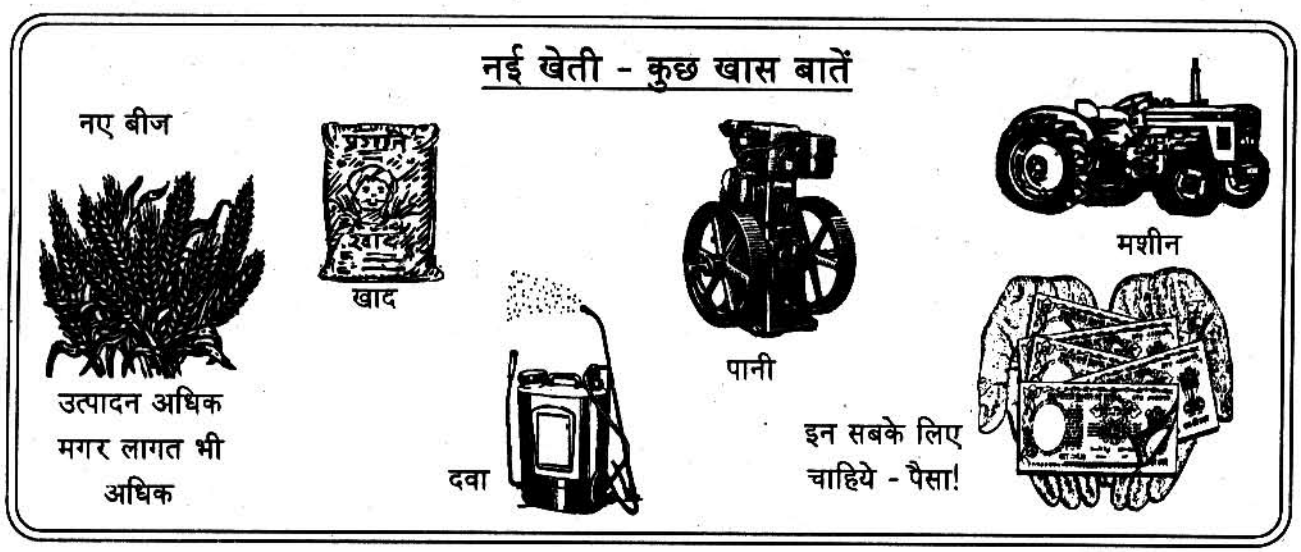

सिंचाई के बगैर नए बीजों का उपयोग नहीं किया जा सकता। इन बीजों से फसल उगाने के लिए सही मात्रा में **रासायनिक खाद** डालना ज़रूरी है। नए बीजों की फसलों में बीमारियां भी बहुत लगती हैं, इसलिए समय-समय पर **दवा** छिड़कना भी ज़रूरी हो जाता है।

किसानों को ये नए बीज, खाद व दवा खरीद कर ही डालने पड़ते हैं। पहले घर के बीज व गोबर की खाद से ही खेती का काम चल जाता था।

इन नए तरीकों से उपज तो बढ़ती है, लेकिन लंबे समय तक इनका उपयोग करने से मिट्टी बिगड़ सकती है। इस समस्या के बारे में तुम अगली कक्षाओं में पढ़ोगे।

गुरुजी के साथ चर्चा करो कि तुम्हारे आस-पास की खेती में किन-किन बातों में बदलाव आए हैं?

नई खेती में पैसे का खर्च ज़्यादा क्यों होता है?

आओ इस पाठ में देखें, खेती के इन नए तरीकों का अलग-अलग किसानों पर क्या असर पड़ रहा है।

रामू - एक मध्यम किसान

एक दिन हम भेड़ागांव गए। कोटगांव की तरह भेड़ागांव भी एक मैदानी गांव है। लेकिन यहां अधिकतर नहरों से सिंचाई होती है। जब हम भेड़ागांव पहुंचे तब सोयाबीन की कटाई शुरू हो चुकी थी। हमें देख कर दूर से रामू ने बुलाया।

"आओ पानी पीयो। थक गए होगे।"

रामू से हमारी अच्छी पहचान थी। हम उसके खेत की ओर चल दिए। फसल काफी घनी लग रही थी। इस बार दाने भी अच्छे आए थे। खेत पर बने टपरे की ओर चलते हुए हमने कहा "इस साल तो तुम्हारी फसल खूब अच्छी लग रही है। इस बार 30-35 बोरे सोयाबीन तो हो जाएगी।"

"हां, इस बार **सोसाइटी** से उधार मिल गया था। इसलिए मैं सही समय पर और ठीक मात्रा में खाद और दवा दोनों डाल पाया हूं। इसलिए फसल भी बढ़िया हुई है।" रामू ने उत्तर दिया।

रामू के पास 5 एकड़ ज़मीन है और एक बैलजोड़ी। जब से भेड़ागांव में नहरों से सिंचाई शुरू हुई है, वह साल में दो फसल ले लेता है। बरसात में सोयाबीन और ठण्ड में गेहूं व चने की फसल लेता है। सिंचाई और रासायनिक खाद से उपज काफी बढ़ गई है।

रामू, उसकी पत्नी और तीन बच्चे खेत पर काम कर रहे थे। उन के अलावा दो मज़दूर भी थे। रामू की पत्नी काम छोड़कर हमारी तरफ आई। उसने हमें पानी पिलाते हुए पूछा, "क्यों आज

कैसे आना हुआ?"

हमने कहा, "हम तो वैसे ही मिलने आए थे। आपका काम कैसा चल रहा है?" रामू की पत्नी बोली, "अभी तो कटाई ही पूरी नहीं हुई है। फिर कहीं से थ्रेशर किराए पर लेकर **दावन** कराना पड़ेगा। इस बार दो ही मज़दूर मिल पाए हैं इसलिए हर काम देर से हो रहा है। और बेचने भी तुरन्त जाना है।"

बोनी, पलेवा, निंदाई-गुडाईके समय तो रामू जैसे मध्यम किसानों को मज़दूरों की ज़रूरत नहीं पड़ती है। परिवार के सभी लोग अपने खेत पर काम करते हैं। परन्तु सोयाबीन और गेहूं की कटाई के समय पांच-छह मज़दूरों की ज़रूरत पड़ती है।

कटाई के समय मज़दूरों की ज़रूरत बढ़ जाती है। इसलिये मज़दूरी भी बढ़ जाती है। रामू जैसे मध्यम किसान उस समय इतने पैसे नहीं दे पाते। इसलिए उन्हें कम मज़दूरों से काम चलाना पड़ता है।

रामू को फसल बेचने की जल्दी है। उसने कहा, "मुझे सोयाबीन बेचना है। सोसाइटी से खाद-बीज के लिए जो कर्ज़ लिया था, उसे लौटाने के लिए फसल तुरन्त बेचनी है। यह कर्ज़ नहीं लौटाया तो अगली फसल के लिए कर्ज़ नहीं मिलेगा।"

रामू जैसे मध्यम किसानों के पास थोड़ी-सी ज़मीन होती है। इसमें उनके परिवार का **गुज़ारा** हो जाता है। उन्हें किसी दूसरे के खेत पर मज़दूरी करने के लिए नहीं जाना पड़ता है। परन्तु उनके पास इतने पैसे नहीं होते कि वे अपने ही पैसों से खाद-बीज-दवा आदि खरीद कर डाल पाएं। उन्हें हर साल सोसाइटी या **साहूकार** से उधार लेना पड़ता है। तभी वे सही मात्रा में खाद-दवा आदि डाल पाते हैं। और तभी उनकी फसल अच्छी हो पाती है।

बातें करते करते कुछ समय हो गया था। हमें और लोगों से भी मिलना था। रामू को अपनी कटाई खत्म करने की जल्दी थी। तो हम वहां से गांव की ओर निकल पड़े।

रामू ने फसल अच्छी होने का क्या कारण बताया?

इनमें से गलत वाक्यों को चुनकर सुधारो

-रामू का परिवार दूसरों के यहां मज़दूरी नहीं करता है।

- खाद-बीज के लिए रामू ने कर्ज़ लिया था।

- अपनी खेती से रामू का गुज़ारा नहीं होता है इसलिए उसे मज़दूरी भी करनी पड़ती है।

यदि तुम गांव में रहते हो:

तुम्हारे गांव में कम से कम कितने एकड़ ज़मीन वाले किसान परिवारों का अपनी खेती से गुज़ारा हो जाता है और उन्हें दूसरों के यहां मज़दूरी नहीं करनी पड़ती? सिंचित और असिंचित, दोनों के लिए बताओ। छह सात लोगों का एक परिवार मानो।)

गंगू – एक छोटा किसान

रास्ते में हमें गंगू मिल गया। वह अपनी फसल बेच कर शहर से लौट रहा था। हम गंगू के साथ बैलगाड़ी में बैठ कर गांव की ओर चले। रास्ते में गंगू से बातें होने लगीं।

"कहां से चले आ रहे हो?" हमने गंगू से पूछा।

"सोसाइटी के दफ्तर में सोयाबीन बेचने गया था, वहीं से आ रहा हूं।" गंगू ने कहा।

"तुमने तो अपनी फसल काटते ही बेच दी! इतनी जल्दी क्या थी? अभी तो बाज़ार में सोयाबीन बहुत सस्ता बिक रहा है। अभी बेच कर तुम्हें बहुत कम दाम मिला होगा।" हमने गंगू से कहा।

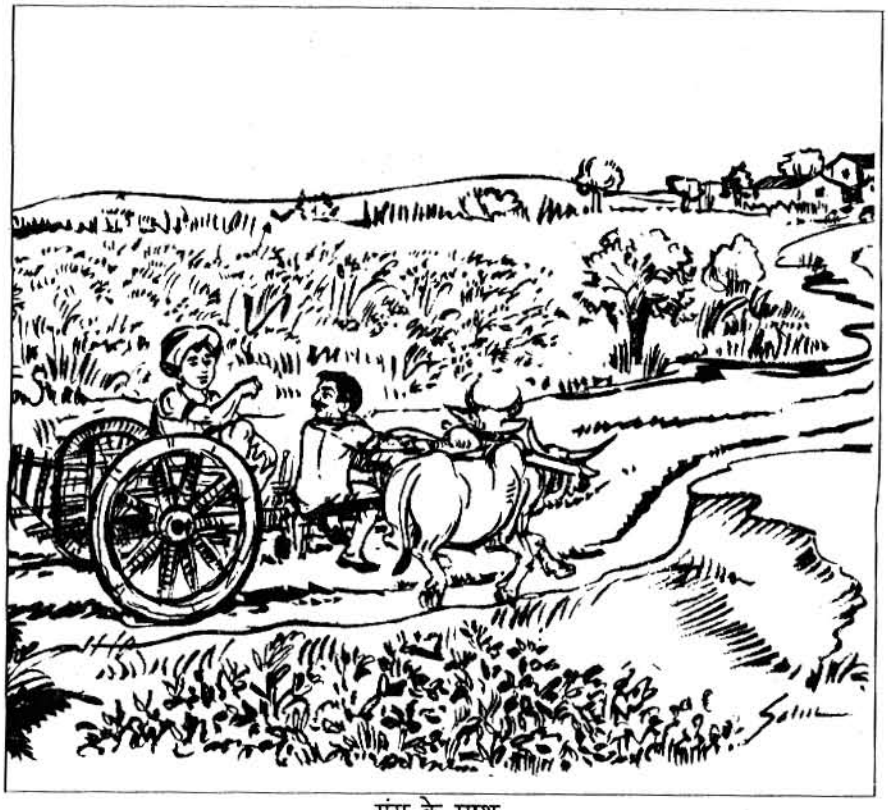

गंगू के साथ

गंगू थोड़ी देर चुप रहा। फिर बोला, "हां मेरा सोयाबीन सस्ता तो बिका है, पर मुझे नगद पैसों की ज़रूरत है। खेती से साल भर का खर्चा कहां चलता है। घर को खर्चों के लिए उधार लिया हुआ था। इसीलिए सोयाबीन को बेच कर पैसे लाया हूं। अब जाकर उधार चुकाऊंगा।"

गंगू के पास सिर्फ दो एकड़ सिंचित ज़मीन है। उसके पास खेती के और कोई **साधन** नहीं हैं। उसे अपनी दो एकड़ ज़मीन जोतने के लिए हल, बैल, खाद, बीज, दवा, सब कुछ उधार पर लेना पड़ता है। घर के खर्चों के लिए भी उधार लेना पड़ता है। जब से नहरों से सिंचाई होने लगी है, तब से वह अपने खेतों से दो फसल लेने लगा है। पर उधार चुकाने के लिए उसे अपनी फसल जल्दी बेचनी पड़ती है। पैसों की कमी के कारण वह इस बात का इन्तज़ार नहीं कर सकता कि जब भाव बढ़ें तब फसल बेचे। कभी उधार देने वाले को सस्ते में फसल बेचनी पड़ती है।

खेतों के बीच से गुज़रते हुए हमें कई खेतों में भरपूर फसल दिखाई दे रही थी। हमने गंगू से पूछा, "इस साल तुम्हारी फसल कैसी हुई है?"

गंगू ने कहा, "इस साल तो फसल कम हुई है।" यह सुनकर हमें अचरज हुआ।

हमने पूछा, "दूसरों की फसल तो अच्छी हुई है। तुम्हारी कम कैसे हो गई?"

गंगू ने थकी हुई आवाज़ में जवाब दिया, "इस साल मैं बहुत थोड़ी सी खाद डाल पाया हूं, क्योंकि जितने पैसे चाहिए थे, उतने का कर्ज़ा नहीं मिल पाया। मेरे दो एकड़ के खेत में कुल छह बोरे सोयाबीन ही हुआ है।"

गंगू जैसे छोटे किसानों को आसानी से कर्ज़ा नहीं मिल पाता है। उन्हें कई बार साहूकार को बहुत

ज़्यादा **ब्याज** देना पड़ता है। उनके पास ज़मीन कम होती है इसलिए आमदनी वैसे ही कम रहती है। इस हालत में छोटे किसान खेती के नए परंतु खर्चीले तरीकों का पूरी तरह इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं।

गंगू की परेशानियां हम समझ पा रहे थे। हमने उससे पूछा "अब तुम क्या करोगे? साल भर का गुज़ारा कैसे होगा तुम्हारा?"

गंगू बोला, "मैं लोहारी का काम करता हूं। पर लोहारी का काम आजकल नहीं मिलता। मैं तो कल से ही दूसरों के खेतों पर सोयाबीन काटने जाऊंगा। मुझे अब मज़दूरी करके ही कमाई करनी पड़ेगी।"

गंगू एक छोटा किसान है। छोटे किसानों का गुज़ारा अपनी ही ज़मीन पर नहीं हो पाता। लेकिन कुछ महीनों के लिए अनाज मिल जाता है। उन्हें साल भर गुज़ारा करने के लिए दूसरों के खेतों पर मज़दूरी भी करनी पड़ती है। खेती और घर के खर्चे के लिए उन्हें कर्ज़ लेना पड़ता है।

वाक्य पूरा करो -

क) गंगू की फसल कम होने का कारण था कि . . . . . .।

ख) गंगू के लिए मज़दूरी करना ज़रूरी था क्योंकि . . . . . .।

ग) कर्ज़ चुकाने के लिए गंगू को फसल .....।

यदि तुम गांव में रहते हो -

क) तुम्हारे गांव में कितने एकड़ ज़मीन होने पर किसान परिवार बैलजोड़ी रख पाता है?

ख) किसानों को खाद-बीज के लिए कर्ज़ कहां-कहां से मिल जाता है? इस कर्ज़ को कब और कैसे वापिस करना होता है?

हरनारायण - एक बड़ा किसान

हरनारायण भेड़ागांव का एक और किसान है। उसके पास खेती के लिए 25 एकड़ ज़मीन है। ज़मीन पूरी तरह सिंचित भी है। वैसे गांव में उससे भी बड़े किसान हैं जिनके पास 50-100 एकड़ से ज़्यादा ज़मीन है। उन्हें खेतों से बड़ी मात्रा में उपज मिल जाती है।

जब हम हरनारायण से मिले तो वह अपने घर के बाहर खड़ा मज़दूरों से अपनी ट्रैक्टर-ट्रॉली से सोयाबीन के बोरे उतरवा कर घर में रखवा रहा था। 'जय राम जी' कहते हुए हमने उससे पूछा, "आप तो सोयाबीन अन्दर रखवा रहे हैं। मण्डी जाकर बेचने का विचार नहीं है क्या?" इस पर हरनारायण बोला, "बेचेंगे, पर इतनी जल्दी भी क्या है? अभी तो सोयाबीन के भाव बहुत कम हैं। कुछ समय बाद भाव बढ़ने लगेंगे तब बेचेंगे।"

यह सोयाबीन की कटाई का समय था। तुम जानते हो कि किसी भी फसल की कटाई के बाद बाज़ार में वह फसल बहुत मात्रा में आ जाती है और सस्ते में बिकती है। हरनारायण को तुरन्त पैसों की ज़रूरत नहीं थी और उसके पास सोयाबीन रखने के लिए कमरे थे। इस कारण वह भाव बढ़ने का इन्तज़ार कर रहा था।

हरनारायण ने काम खत्म करवाया और हमें घर के अन्दर ले गया। उसने अपनी बेटी से जल्दी से चाय-नाश्ता लाने को कहा।

हमने पूछा, "आप बहुत जल्दी में दिख रहे हैं। कहीं जाना है, क्या?"

"बस शहर तक जाना है। मैं 5 एकड़ ज़मीन खरीदने की सोच रहा हूं। ज़मीन का मालिक शहर

में रहता है। उससे बात करनी है और कुछ बाज़ार भी करना है।" हरनारायण ने कहा।

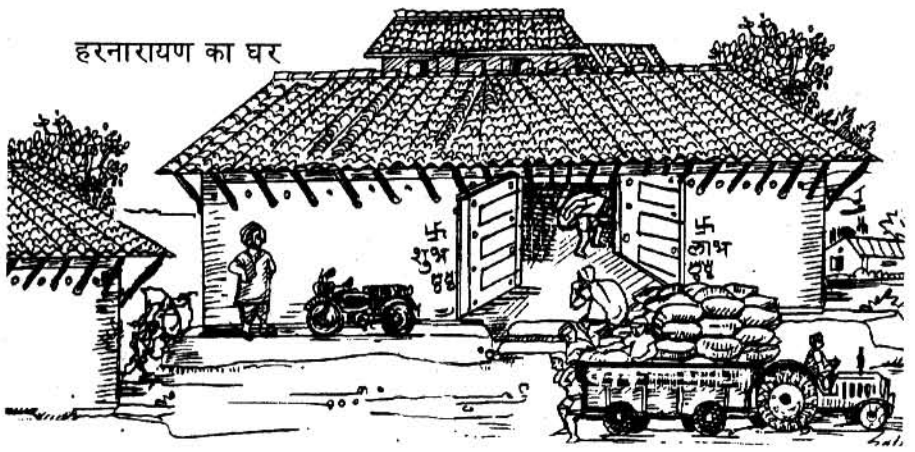
हरनारायण का घर

नाश्ते के साथ-साथ हरनारायण और हम बात करते रहे। उसने अपनी खेती के बारे में बहुत कुछ बताया। बीच में उसने कहा, "मैंने बैंक से लोन लेकर कई चीज़ें खरीदी हैं - मोटर पम्प, थ्रेशर और फिर टैक्ट्रर ट्राली। लोन भी चुका दिया है। अब अपने पैसों से ज़मीन खरीदने की सोच रहा हूं।"

हम हरनारायण जैसे बड़े किसानों के बारे में सोचने लगे। अपने खेतों की कमाई से उसके परिवार का गुज़ारा अच्छी तरह हो जाता है। वह खेती-बाड़ी की ज़रूरत की चीज़ों (जैसे खाद, बीज, दवा) में कोई कमी नहीं होने देता है। इन सब चीज़ों के लिए उसे उधार भी नहीं लेना पड़ता है। खेती की कमाई से इतना फायदा हो जाता है कि वह नई ज़मीन खरीदने की सोच पाता है। उसने खेती के सभी साधन - पम्प, ट्रैक्टर, थ्रेशर आदि पहले ही खरीद लिए हैं।

हरनारायण जैसे बड़े किसान सभी कामों के लिए मज़दूर रख लेते हैं। उनको और उनके परिवार के लोगों को अपने खेतों पर काम करने की ज़रूरत नहीं होती। वैसे भी बड़े किसानों के पास ज़मीन ज़्यादा होती है और सिर्फ परिवार के लोगों के सहारे जोती नहीं जा सकती।

बड़े किसानों के यहां कुछ मज़दूर तो ऐसे होते हैं जिनको साल भर के लिए रखा जाता है। इन्हें **हरवाहा** कहते हैं। हरवाहों के अलावा फसलों की बोनी, कटाई आदि के समय और मज़दूरों को भी रखा जाता है।

वाक्य पूरे करो:-

क) हरनारायण फसल बाद में बेचना चाहता था क्योंकि . . .

ख) हरनारायण की खेती कर्ज़ पर नहीं चलती क्योंकि . . .

रामू भी हरनारायण की तरह और ज़मीन खरीदने के लिए पैसे क्यों नहीं बचा पाता है?

क्या रामू जैसे किसानों को हरवाहे रखने की ज़रूरत होती है? समझाओ।

गंगू और हरनारायण के परिवारों में क्या अंतर है?

तुम्हारे गांव में कितने एकड़ ज़मीन होने पर एक किसान परिवार को खेती के खर्च जैसे खाद-बीज आदि के लिए कर्ज़ लेने की ज़रूरत नहीं पड़ती?

रज्जू बाई – एक मज़दूर

भेड़ागांव के सभी मज़दूर परिवार काम में लगे हुए थे। हम एक खेत पर पहुंचे जहां सोयाबीन की कटाई चल रही थी।

सोयाबीन की कटाई के समय एक साथ बहुत मज़दूर चाहिए होते हैं। सोयाबीन पकने के बाद उसकी कटाई जल्दी-से-जल्दी करनी पड़ती है। कटाई तुरन्त नहीं की जाए तो सोयाबीन के दानों के **तिड़कने** (फूट कर गिरने) का डर लगा रहता है।

भोजन का समय था। कई मज़दूर बैठे भोजन कर रहे थे। हम ने कहा, "आजकल तो आप लोगों को दम भरने की भी फुरसत नहीं है।" वहां बैठी रज्जू बाई ने जवाब दिया, "हां, कटाई का समय जो है - वह भी सोयाबीन की।"

रज्जू बाई जैसे कई मज़दूर परिवारों के पास बिल्कुल ज़मीन नहीं होती है। ऐसे परिवारों को **भूमिहीन** मज़दूर कहते हैं। इसलिए अपने खेतों से खाने के लिए अनाज पैदा करने का सवाल ही नहीं उठता है। ये लोग पूरी तरह दूसरों के खेतों पर मज़दूरी करके अपना गुज़ारा करते हैं।

रज्जू बाई से हमने पूछा, "सिंचाई के बाद अब सालभर तो काम मिल जाता होगा?" रज्जू बाई ने कहा, "सिंचाई होने से मज़दूरी का काम तो बढ़ा है। अब हमें गांव में ही कटाई का काम मिल जाता है। हमें **चैत** करने बाहर के गांवों में नहीं जाना पड़ता है। पर यह तो सिर्फ कटाई के कुछ दिनों की बात है। साल के हर रोज़ हमें मज़दूरी कहां मिलती है?"

सिंचाई के कारण दो फसल लेना सम्भव हो जाता है और इसलिए मज़दूरी करने के अवसर भी बढ़ जाते हैं। फिर भी साल भर काम नहीं मिलता है। बोनी और कटाई के समय खूब काम रहता है और बाद में कम। दूसरे कामों के लिए मज़दूरी भी कम मिलती है। इसलिए बोनी और कटाई का समय ही कुछ कमाने का समय होता है। रज्जू बाई जैसे मज़दूरों को सिंचाई के बाद भी साल भर के गुज़ारे लायक आमदनी नहीं मिल पाती है। कई बार उन्हें कर्ज़ा लेना पड़ता है।

सोयाबीन की कटाई

खाना खत्म करके मज़दूर उठकर वापस खेत पर जाने लगे। हम भी वहां से उठकर गांव की बस्ती की ओर लौट रहे थे कि रास्ते में हरनारायण के लड़के से फिर मुलाकात हुई। उसके खेत की कटाई अभी खतम हुई थी। उसने हमें बताया कि इस साल उसने एक खेत की कटाई **हार्वेस्टर कंबाईन** से किराए पर करवाई है।

हार्वेस्टर से कटाई

कटाई थोड़ी महंगी पड़ी पर काम जल्दी निपट गया। मज़दूर भी मुश्किल से मिलते है। इसलिए वह सोच रहा है कि अगले साल वह पूरी कटाई हार्वेस्टर से ही करवाएगा।

तुमने कोटगांव में हार्वेस्टर के बारे में पढ़ा था। यहां उसका चित्र देखो।

हार्वेस्टर एक दिन में सोयाबीन के बारह एकड़ खेत की कटाई कर सकता है। यदि मज़दूर इस काम को करें तो बहुत लोगों को काम मिल सकता है। हार्वेस्टर से कटाई होने लगे तो बहुत से मज़दूर परिवारों को काम नहीं मिलेगा।

गुरुजी की मदद से समझो: जो काम एक हार्वेस्टर एक दिन में करता है, उतना ही काम एक दिन में करने के लिए कितने मज़दूरों की ज़रूरत होगी?

अगले दिन भेड़ागांव में बाज़ार का दिन था। हाट करने के लिए बहुत से मज़दूर परिवार भी आए हुए थे। एक छोटी-सी बोतल में मीठा तेल खरीदते हुए हमें रज्जू बाई मिली। हमने पूछा "कटाई के पैसे मिल गए, रज्जू बाई, तभी बाज़ार करने आई हो?" "कटाई के पैसों से ज्वार खरीद कर रख लिया है। ज्वार अभी सस्ती है। दो-तीन महीनों का काम चल जाएगा। सोचा तो था ठण्ड के दिनों के लिए एक चादर भी खरीदूंगी। पर पैसे नहीं बच पाए हैं।" रज्जू बाई ने कहा।

भूमिहीन मज़दूर परिवार बहुत ग़रीब होते हैं। उनके पास ज़मीन नहीं होती है। वे गंगू जैसे भी नहीं है कि कुछ महीनों का अनाज पैदा कर पाएं। कुछ अनाज मज़दूरी में मिल जाता है परन्तु कई बार अनाज बाज़ार से महंगा खरीद कर भी खाना पड़ता है। यह सही है कि रज्जू बाई जैसे मज़दूरों की आमदनी बढ़ी है। लेकिन बढ़ती हुई महंगाई के कारण आज भी उन्हें अपनी रोज़ की ज़रूरतों के लिए बार-बार उधार लेना पड़ता है।

सोयाबीन की कटाई के समय मज़दूरी अधिक क्यों हो जाती है?

तुम्हारे गांव में बिना ज़मीन वाले मज़दूर परिवारों के पास साल भर क्या-क्या काम रहता है? पता करो और समझाओ।

हार्वेस्टर आने से क्या फर्क पड़ सकता है?

हम भेड़ागांव के चार अलग-अलग परिवारों से मिले और हमने अलग-अलग किसानों और मज़दूरों पर सिंचाई और खेती के नए तरीकों का अलग-अलग असर भी देखा।

हमारे देश के अधिकांश लोग गांवों में रहते हैं और किसानी से जुड़े हैं। लगभग सभी गांवों में छोटे,

बड़े और मध्यम किसान और मज़दूर मिलेंगे। इनमें से बहुत से लोग भूमिहीन मज़दूर हैं, रज्जू बाई की तरह। इनके पास ज़मीन बिल्कुल नहीं है और वे सिर्फ अपनी मज़दूरी से गुज़ारा करते हैं। गंगू की तरह बहुत सारे छोटे किसान भी हैं। इनका अपनी खेती से गुज़ारा नहींहो पाता और उन्हें कुछ समय मज़दूरी या और कोई धंधा करना पड़ता है। बाकी जो ग्रामीण परिवार हैं उनमें से कई लोग मध्यम किसान हैं, यानी रामू जैसे। ये लोग खेती से गुज़ारा कर लेते हैं परंतु कोई बचत नहीं कर पाते। बहुत थोड़े से लोग हरनारायण जैसे बड़े किसान हैं। ये लोग खेती से **मुनाफा** कमा कर बचत भी कर लेते हैं।

ग़रीब मज़दूरों और किसानों के लिए कई योजनाएं बनीं हैं जिनके बारे में हम अगली कक्षाओं में पढ़ेंगे।

अभ्यास के प्रश्न

1. गंगू और रज्जूबाई में क्या समानताएं और क्या फर्क हैं? गुज़ारा, ज़मीन, मज़दूरी - इन बातों का ध्यान रखते हुए उत्तर देना।
2. एक वर्ष की बात है। भेड़ागांव के रामू ने सोयाबीन की बोनी कर दी थी क्योंकि शुरू-शुरू में अच्छी बारिश हो गई थी। परंतु उसके बाद बहुत दिनों तक पानी नहीं गिरा। दुबारा बोनी करने की ज़रूरत हो सकती थी। इस स्थिति में वह क्या-क्या कर सकता है सोचकर बताओ।
3. पृष्ठ 144 से 145 पढ़ कर बताओ -
   हरनारायण की अच्छी आमदनी होने के तीन मुख्य कारण क्या हैं?
4. रज्जू बाई जैसे मज़दूरों को गुज़ारे लायक आमदनी क्यों नहीं मिल पाती - तीन कारण समझाओ।
5. तुमने पाठ में अलग-अलग किसानों की हालात समझी। उनकी जानकारी नीचे दी गई तालिका में सही जगह भरो।

	ज़मीन	खेती के साधन	कर्ज़ा	मज़दूरी	फसल का बेचना
रामू जैसे मध्यम किसान	5 एकड़ गुज़ारे के लिए काफी		खाद-बीज के लिए		
गंगू जैसे छोटे किसान					फसल के बाद तुरंत बेचता है
हरनारायण जैसे बड़े किसान				मज़दूर लगाता है	
रज्जू बाई जैसे मज़दूर	कुछ नहीं				